अफसर की डायबिटीज़

डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

जो नादान समझते हैं कि सबकी डायबिटीज़ एक सी होती है, या कि होनी चाहिये, वे कभी डायबिटीज़ वाले अफसर को देखें । निहारें कभी आला अफसर की डायबिटिज़ के जलवे । न तो वो कोई ऐरा– गैरा मरीज़ है और न ही उसकी डायबिटीज़ हम–आप जैसों वाली तुच्छ सी डायबिटीज़ । वो आला अफसर है और टायलेट में भी नहीं भूल पाता कि वह अफसर है । माना कि वह बीमार है, पर अफसर भी तो है। अफसरी स्वयं एक बीमारी बन गयी है उसके व्यक्तित्व की। वह अफसरी ढोता भी है और अफसरी पर सवार भी रहता है। वह कोई मौका नहीं छोड़ता यह बताने का कि वह अफसर है। वह सारी दुनिया को मातहत समझता है और समझता है कि दुनिया के हर आदमी के खिलाफ वह ऐक्शन ले सकता है। उसका बस चले तो वह डायबिटीज़ को सस्पेंड कर दे, ब्लेड–सुगर के इन्क्रीमेंट रुकवा दे या कभी शुगर रिपोर्ट ज्यादा बताये तो ग्ल्यूकोमीटर को थानेदार द्वारा ज़ब्त करवा दे। वह डायबिटिज़ को भी अपना मातहत मानता है – डॉक्टर तो उसके मातहत हैं ही। वह चाहता है कि वह दवाई ले न ले, दवाई के पहले रसगुल्ले खाये या बाद में(घूमे पर कार में – फिर भी यह डॉक्टर की नैतिक, कानूनी तथा संवैधानिक ज़िम्मेदारी बनती है कि उसकी डायबिटीज़ को ठीक करके उसकी रिपोर्ट अफसर को सबमिट करे। आला अफसर सर्वज्ञात है – यह तथ्य हम जानते हैं। तभी तो वह आज कृषि विभाग का सेक्रेट्री होकर कृषि वैज्ञानिकों को दिशा निर्देश दे सकता है, तो कल शिक्षा विभाग का सेक्रेट्री बनकर बता सकता है कि शिक्षा कहाँ गलत हैं । सो ऐसा सतत् भ्रम का शिकार प्राणी है वह कि जिसे लगता है कि वह डॉक्टर से ज़्यादा जानता है । यह समझलें कि आला अफसर यदि डॉक्टर के पास आया है, तो वह अपनी बीमारी के विषय में जानने – ठीक होने नहीं आया है । वह तो डॉक्टर का ज्ञान बढ़ाने के लिये आया है। कर्तव्य है उसका। आला अफसर चाहता है कि डायबेटोलोजिस्ट उसके ज्ञान से लाभ उठायें। सो जब तक अन्य मरीज़ बाहर बैठे अपने नम्बर की प्रतीक्षा में सूख रहे होते हैं, तब तक वह अंदर बैठकर डॉक्टर को अपने डायबिटीज़ के ज्ञान से तरबतर कर रहा होता है। उसने इन्टरनेट से डाउनलोड करवाया है । दफ्तर में मातहतों को काम दे रखा है कि कम्प्यूटर पर सर्फिंग करें और लायें नायब मोती । वे लाते हैं। बहुत से तो वह खुद ही डुबकी मारके ले आता है ।

आला अफसर यदि रात के ग्यारह बजे भी फ्री हुआ है, तो चाहता है कि डॉक्टर को फोन करके उससे अपनी डायबिटीज़ के बारे में लंबा बतियाये । डॉक्टर तो स्साले फ्री रहते ही हैं। काम क्या है उनको। उनके न बीबी, न बच्चे। अपनी डायबिटीज़ के बारे में वह सब कुछ बता देना चाहता है । यदि सोते–सोते,सपने में भी उसे किसी गोली के बारे में कन्फ्यूज़न लगे तो वह जागकर रात दो बजे भी डॉक्टर को फोन कर सकता है कि नीली वाली गोली को खाने के बाद लेना ठीक होगा या पहले? वह हँसकर कहता है कि भई, हम तो डॉक्टर से पूछे बिना कुछ नहीं करते । डॉक्टर जानता है कि उसका टेटुंआ अफसर के हाथ में है । वह सरकारी डॉक्टर का ट्रान्सफर करा सकता है, प्रायवेट नर्सिग होम पर छापा डलवा सकता है और बड़े से बड़े डॉक्टर को उसकी औकात दिखा सकता है। वह, जो मंत्रियों के आगे घिघियाता है, नेताओं के समक्ष हें – हें करता है, अपने से बड़े अफसर की कार का दरवाजा

खोलने को तत्पर रहता है – वह इन सबका बदला डॉक्टर से ले सकता है । इसी चक्कर में डॉक्टर को तत्पर रहना पड़ता है कि उसकी डायबिटीज़ के अंतहीन बोरिंग किस्से को, बार–बार सुने और सिर भी न धुने। अफसर अपनी डायबिटीज़ का पिछले पन्द्रह साल का पूरा रिकार्ड फाइल में धरे हैं और चाहता है कि डॉक्टर सारे काम छोड़कर उस फाइल का एक–एक पन्ना आद्योपांत पढ़े–गुणे और उससे डिस्कस भी करे। तबकी ब्लड शुगर, जब सन अस्सी में अफसर जगदलपुर में कलेक्टर था, और तबका ईसीजी जब सन पच्चासी से वह डेपुटेशन में दिल्ली में था। सब धरे

हैं। सब देखें डाक्टर। डॉक्टर खूब जानता है कि इन परचों का अधिकांश अब अप्रासांगिक है। पर क्या तो वह कहे और क्या तो वो करे। बंदर तलवार लेकर घूम रहा है और डॉक्टर से अपेक्षा है कि वो खुद को भी बचाये और बंदर को भी ।

अफसर बता रहा है कि देश के किस–किस नामी डायबेटोलोजिस्ट को वो दिखा चुका है। वह जिस भी नये शहर जाता है – घूमने, दौरे पर या यूं ही – वहीं के सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर को दिखाकर राय लेता है। सुनता सबकी है और करता अपनी है। फिर यह भी पूछता जाता है कि उसकी डायबिटीज़ कोई क्यों ठीक नहीं कर पा रहा? वह होम्योपैथी का हिमायती है, ऐलोपैथी का आलोचक है, आयुर्वेद से प्यार करता है, नेचुरोपैथी का सपोर्टर है, यूनानी दवाईयों का इतिहास जानता है । वह चाहता है कि ऐलोपेथिक डॉक्टर उसे सजेस्ट करे कि होम्योपैथी ठीक रहेगी या आयुर्वेदिक? खाता वह ऐलोपैथिक दवाईयाँ ही है, पर अहसान–सा जता कर। वो हमेशा पूछता रहता है कि भाई, और कौन–सी नयी दवाई आई है डायबिटीज़ की? बताता है कि उसके अमेरिका वाले भाई ने कहीं किसी जर्नल में कोई नई दवा का कोई अच्छा सा नाम पढ़ा था – तो क्या वो अपने यहाँ आ गई है। आ गई हो, तो हमें दिला दें। कीमत की परवाह न करें। अफसर के लिये सरकार चुकाने बैठी है । जितने का बिल हो री–इम्बर्स करेगी सरकार। सरकारी कार लेकर अफसर का ड्राइवर दस बार आकर दस जगह फार्म पर दस्तखत कराके ले जायेगा। वह पचास–सौ की दवाई के लिये हजार का सरकारी पैट्रोल जलायेगा। अधिकार है उसका।

आला अफसर चाहता है कि उसका जो भी होना हो, उसके बंगले पर ही हर चीज़ का इंतज़ाम हो सके तो बेहतर । बंगले पर आकर डॉक्टर देखले, सिस्टर बंगले से ब्लड सेंपल ले जाये और बाद में डॉक्टर उस रिपोर्ट को लेकर यदि बंगले पर आकर डिस्कस कर ले, तो फिर क्या कहने ! अफसर का बस चले तो आपरेशन तथा ऐनीमा से लेकर पोस्टमार्टम तक बंगले पर ही हो। सत्ता के दर्प में तप रहा है अफसर । अफसरी उसे लू की भांति लग गयी है। वह मानने को तैयार नहीं है कि बीमारी यह देखकर नहीं आती कि तू किस पोस्ट पर है और कहाँ–कहाँ तक तेरी पहुँच है। वह समझने को तत्पर नहीं कि डॉक्टर के सामने सभी मरीज़ बराबर हैं और सारे मरीजों का हक डॉक्टर पर उतना ही है। वह मानने को तैयार नहीं कि ऐसा न करके वह अपनी ही हानि करता है । डॉक्टर तो मज़बूर है, जैसे कि पूरी दुनिया ही मज़बूर है तेरी अफसरी के सामने । पर तू अपनी तो सोच यार। कहीं तो अफसर से वापस आदमी हो जाया कर। कहीं तो यह भुला कि तू अफसर है। कम से कम अपने शरीर और अपनी डायबिटीज़ को तो अफसरी से बक्श! जब तू डॉक्टर के पास जा, तो डायबिटीज़ का मरीज़ बनकर पहुँच। अफसरी को यदि थोड़ी देर के लिये डॉक्टर के चेंबर के बाहर छोड़ आये, तो कैसा रहे बॉस ?

– डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी
ए–40, अलकापुरी, भोपाल – 462004
फोन : 930–3131964